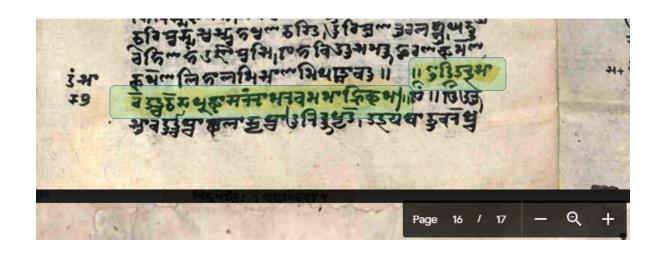
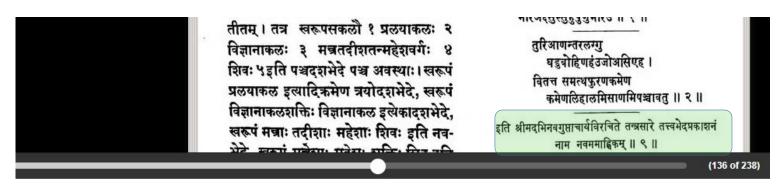
kulgam11.pdf

Title: Tantra Sara (by Acharya Abhinava Gupta)



Re: https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.242330/page/n135/mode/2up





विश्वीभक्ष्यद्वात्र्यम्। विकिर्विष्यः इड्डाः सः इक्ष्यक् किश्वगिर्द्धिंधां भा उच्यक भिवस्त न्य है मुक्तीयभा न्यारा करता थाः विष्या कर्षा । विकार पे अलभू : विमा क्रिक्सिल्विश्वष्ट्राध्यः धिर्गण्यक्रम् ठः कर्त्तांभि भव्यम त्रभड़ात्र्यक्षण्येवयः। क्रीवीरंगं मीमार्कः भिक्क्यितियेगः प्रधी किनी कर्ने भी भी प्रति प्रचि विरा गुर्टि मेडिं पण्ये विद्यां विदिल्लिं। इहवः अः विनमे रणवरमहत्य इस इ व्यवण्यनभः मुल्याण्यं अन्तः १७ यद्भेक भिरम्भि अन्तः मभाउभु यभारतीवयः १७ अगित्वियिधेशः भाषण्यवेष्यः मभागम्याणिन अन्तः ॐ । उच्च किष्यवतुन्तः क्षमण्यक् किलीरिश्रान्त्रकृष्य

०० भड़ेन्कीय नेर्डिक्थल हिले मनन्य प्रार्थः व भावाय ॥ ०० शानाउना मध्यवहरू मधिर्वाच द्वालादाला वक्रान्त्र मुध्य भाग इंड ११ । ७० हुन्। अचर्ड भूनमः पश्चिमक् क्रम् मिन्ने यंनभः उप्रचेत्र रं उत्राभ भक्द के भूम भुन्ति। गृहित्य विक्रम भक्द के भूम भुन्ति। प्रतिभाष्टि उन्मित्रमेले वाचित्रभाष्टि त्रम्बारण्यति क्वाभण्य नि भिम्न राष्ट्रयं वं सभराष्ट्रयं वेम्न से इंग्भर्ने नाम्ह थाष्ट्र मार्गिया है उत्तर्गर है वामया सी उत्तर एवं एवं भव भंग्निश भवानाभ हारी भिनिश इड्राइट्याः है अहं मिनिश यर्भिक हते: भुगति नेइये: उतियेशल उद्धने उत्तर्क गर्द उचित्वय वेत्रका राज्य भेटिः ग्रहः भूजीय मित्रक्तिः भारण्यते

क्रमाउउ पार ३डिपरहामः अलेनहायकं मुसहान क्रमान् त्यान् ज्ञान्य न्यान् मुद्धीयं मिनः भिष्ट्रां कृत्येत्वान प्राप्ते भ्राप्ति । भाष्ट्रां भूति । भाष्ट्रां भू धेनडनं हर्लेश विक्लिं भाइतियं इध्वा भिन्न भारति । राताक ताताह तातः तर्माः त विकार के कि हे के की अकाची ह कलिकवली वलिकवली हा अभ्यनी १ अचकुउदमती । नियानी ज इसाः भी शम्बाय चिनमे रणवर भक्ल गुण्यूम उन्य मनक्ष्यदेर भेरक्नेन्मः इडन्नधिंभक्त्मां नकल् चित्र थाम्बद्धि अध्यान् न्य भागन्य स्वार्थिय अभ्यत्भेत भाग्ने रंभण्ने उड्ठा धं अत्र मुध्ये हज्ञ चण्मियं वर्णे अद्विष्णं धिन्ने वर्णे रंभनिय निवार्थं भारति वर्णे विद्याणां

मच्छाउम्मात्न्ड इड: भर्मानि द्विकिशेस अरुभिक्ष क्रिडिंग विश्वन अक्षा स्राप्त अधि ग्रम् अवरलम उभाव के का 9 महा । रहित रही अक्षा अवार व निविद्याद्या पर्वाचन मुख्य व निविद्याद्या । एउपाचन मुख्य भाव वर्षा अग्रिक भारत भारत भिवान निमा । । । नार्मान्यकारितान्त्रिकारिता निर्देशकार मानिः भक्षितः यातिः । १३ । धर्षे वर्षे स्वर्णे स्वर्णे स्टा अरुः धार्मा अम्पि अपि । अपि विश्व वि न्युभलाउ १४५० का वर्ष हर भारत के अपने न्युन वर्ष निर्मान्व लाग्युन्द राग्या प्रमाण हर नाम्बंद अक्षकान ह गुल्में विषक क्रिकिशि न अमे ह नवभावन के अहता कर कर उर्हाध्यमण्ड क्लाविक्वावय्भवद्विविविविव्यथित्रभ इसनी विनयणस्मेयहिष्टि सिड्डे इत्यः। सर्भुउंस वङ्ग कल अञ्चरः था बङ्गार्य । इत्येय भारत शामकात्रेभ ७५००विवसमाज्ञान्य भाष्ट्रभाष्य रन्भः भड़िड्ड ध्रमत्र हिड्ड हिएड्रेगल अभभभवक न्यु अधिः। युर्गिषे व अति। या त्र भन्देवशी धिरि रुत्र रूभवर संधिय भी रुद्ध मन रूभ में विद्या गामी निविधियार्थः क्षित्र्द्वीकिथिविग्रहः र विजनिवास भित्र भी विभाग में विश्व में उद्यास देश हो असे असे असे असे कार मानिक हो रुपथ्कमभार भा मार्व प्रकामक माराने न में के भाग



वित्यपुर्वग्रः भेकः प्रमास्वरुष्युभः। दिख्यभ्य उ मे श्रापं भाव के बाद कर महा के बेब के बाद के कि वि में देव समव उर लेड् थे गउड़ दे विस्ता भारपी मा भ्रेणम्युरंगुल्युं।भ्रेमद्वेडः ५हाँ:उद्देस् विश्वरस्व श्रम नियां पुरुषे रथे था निस्क्रिता रहे गुण्ड इनिस्कृती सुर्थे भ्क्नेविध्यम् ४। विश्वभय्याः विश्वरङ्गे दे द्वारेय नविश्वितिशिवक्रमभ्यक्ष्मध्येभ्यं सन्द्रहरू हिभारः मुझे २९९५ हिभानवर् मुडाप्य क्रिकंड स्मिन्ह उद्युभर्भेने, मंग्रह्म। उत्रयुट्डिं, भित्र उत्ते जिथन भवोर भिर्म्भिति,वये। रहादभिष्ठिश्वा । इहा मुक्ति भनाण्य भारति विस्त्र मभन्ते विश्वार । एसम्बर्

नका अर्थः तथा ने विश्व के विश्व कि विश्व कि विश्व कि म उर्भ दिवेयभा सन् स्वत्रि स्विय पहुक्ते मा उर्भनिम ड्रेभवागारेएननभागड्यास्यान्दः, स्रोत्मद्वरः ननभाभक्ष विभि भुड़ डियं बड़ाल गुक्र नन ये एउ य ज्ञाहितिक्सिक्सिय्यं वर्षे मिल्भीर्या गर्भा अव्यर्भद्रश्विक्रम्। क्रिक्ट्रम् क्रिक्ट्रम्भ्रिक्ट भट्डाकण्डायेरानं याभन्त् अप्ट्रपात्रे स्रेम्झ क्लुगण्यम्भाष्टकण्ड्रभेन्नने विद्यार्थं क ला मुद्रस्थित मुज्युथ एत दियान्यगभाज उद्गुउ म्रुरुगविमिश्रुभिक्षिक्रस्व क्षुग्रुद्धिय्यं कं, विलंगसुः भी इन्ति दूर विसिध् : कर्द कर्ने "क्रमें: था

मित्रियं, उस्थाए विभ्रानंगर भर द्रियं उन्हेंबेडि न ग्रस न, थिलोडिने हुक: नगरा देश दूर भेज कर के देश हैं रणकर मारं मगभन मीनं दियाईन इथाइयलभू स उसक ज्यानेश्राहरा उसी प्लस्ट हेथेये :कर्रे दि यव्नः भम्पष्ठकः भन्भन् भावज्ञा अवितिनित्र वडे गायवा उभितः। स्राप्ताय स्पेर्याय विश्व नश्चापविश्वचवः उ३३,म्रेम्प्येचः धार्मः धार्ये य विश्वनित्र से यह भने उद्योध रहे दिय से वे कहा हिभन विभाजनेक्य नद्वभीधनीत्रयानद्वभावदेश द्वारिश व मर्थम् विक्रम्फः। महे । यह । यह । यह

उभार्कित्रक्तेगुरूम ब्राह्मिणारिक्श्रंम ग्रामक्र उ भः भणनः दुग्जार लिवे हे क्रुथा लिथे मम्बू विम्था ं किया उद्देश यह के भक्ते हुई क्यू या विभाभा हि वि सभाने विश्व के विश्व इिड इन्हम्म न्द्रपान् । सर् ध्र हुईभावकः मिश्रद्भार भ्रम्प्य क्रिये ये मर्मे स्थार भाविग्रक्षत्रं र्थक्षिरं रणः अच्यान् रिअवव त्र रभः किं प्रथः अच्छ्यः अच्च ग्रः कि उथा अनेगरुषः अचवा सहम सम्प्रम् द्वारो ह किर्मेल्याइडेणलीडेभरडे,गुल्भभूमयभड़ेम थिवी रहें गुलेक मित्र मित्र मुख्य किला थे इते हे

it

ग्रें र थकं निर्भू ग्रें उर्थभा भागव ग्रें भेड़ है याँ निवन गुण्य अने वेषक्ष, उन थे धिवी उन्ने मिर्वे उन्ने दे है। एलडड़ेन हु भूभी एवं एलड ए में हु कि याव श्रीका के में के दिस्त के तिया कि में के सिंग कि सिंग क्य अंग्रंसभा विष्टाक्रमङ्गे निया अभविश्राम विस्नार्थभार्षाः ।।भक्नाद्वधारियः उभन्तन् । रार्के लाउ निरम्भ द्वर्ग त्यर्ग निर्मा भागा है।। द्वार्यभार्यस्थानम् सम्मान्यस्थानम् ॥ ॥ मुम्द्र ने हमीन दें। भार्षम्बम भागवर्था था भमनेत्र: ५३ भनेतः भन्न भन्न : श्चनक्लः भ्लयक्लः भक्ल द्वाभाष्ठमा भार

डेभा

एसं अनुवनज्यः। उन्हरं स्थितः सिन्या नड्डा जेम उद्मिक्तिमः अटक्से उपयोक्तम, मुर्श्वे रेप प्रेय गरी र्भन्निम्य मेर द्विक्नण्य मे भन्न मिन्न मिन ध्विष्ठिम् विष्ट्र एनं उर्धेवम के वृश्यी भड़र भारत्य । अर्थ उस्म ध्रिक्त विष्म क्रीने इवक्त महिं भन्ने १५५० न उन्भन्नविम् अस्ति। स्वार्थित्रविभन्ति वर्षेत्रीभन्ति वर्षेत्र क्र नप्ता उद्धिभ अविषं भूभाद्व अविष्कृतिभक् लाजाना प्रवास्त्र व्या विकासि भ्राप्ति । भगभविष्यिकगण्डेभकला मित्रभे क्षा उउसक्लस मानाः, विष्ट कन् । क्षित्रधार्थ विक्रमक् मजीनं थलय क नर्गारी विविधयर मन्ति विक्र किल्

उल्वितगल्डल, उद्देश वभित्र भ्रमुक मुन्दि भन्धाः देश्वा कीना सेव भन्न स्था सर्वे हा भनि उथरं भग्रे सहवं गरि भक्ति भन्न सहित क्भक्रसाउद्विक् मिवस्थित। जेहरास अभारः उन्धरण क्रम्मिनिभ्रुस्म द्वेष्ट्यः,क्रण्डम् क्रुहमधदनभागा मझेक्यमहितिझयाहालीक वेमेंहार्य नह्य नेक्स हथयहैं: वसुरः धन रकार विम्यु उत्तर्विम्यः प्रभागः उद्याधिवी भुरुष्भा उत्तर्विम्यु विम्यु विम्य म् अम् विकिश्चिम् भीति। इर्भक्न म् जिद्यां भक् लमाने भस्। थड़ां श्रुध जां ठवंडच। एवं भिवंज भ

37

थिव सभी मिनमित्रिनिश् मिनस्य विस्ताने मिनस् नभी विश्वयं विलब्ध "यह वर्ग नव हव ये मह म्ड भ्रेव ४ अद्भव च दिव हैं, वे हुई भे धिव हि भिड्न भू उया महा गाँउ सप्रहें, सप्रहास में बडबा मर्वे हरू के हु" इविरुद्ध पद्येग इडिस्थः विश्व । वर्षे वर्षः भाग्य थेवप्रक्रिंग किंडदिग्र ध्रार्में ध्रार्में ध्रार्थिवम् नि रुर्भ्यं म्र्थं उद्भल उद्भेष्ट्रम्भव उउध्कम्म । नाइक यिमधिभूडीिभवरहरू भनेवस् विम्सूणम्येगञ्ज ि इर धारेभा स्वत्रभूभन्द्रभंव इभिधालेका प्वार श्रुथं उचि इंबा भक्ष भारत कि विविध्य वि वैद्यान्त्रभागविधार्मित्रं इस्री इस्रेड्यंभड्भेडे विष

क्रिक् उच्च भिम्म स्थानं कर्ज्यम् भू उस् भभीत डि, मिवस्र विस् उं हो भे धस्त्रभा विम् डिस भभु नाप्भद्विस् ने स्थाय की हवि । की भूक " वर्ग उसेवनील सुउम् थं प्भारति। यश्चिम् चे उसव अपसम्मिश्विभन्नभ्रेयया हि । अपस्य मुक्तं शिष द्यः भरेशिभूगनगुभद्वं स्वद्गित्र गामिक्षिक र्भक्नरपूर्भरकेश भक्तराधेवंधा क्रम् थिउ वस्कृते विरस्म विली रेड के विभक्त लग्रुनंद्रयेग्न्याभक्तभ्र गर्भेट्ट इयेग्न उस जिसकि भेराइने हिस्स्य स्थर से भये हो उस सभक न्य भर्भर्भर्भवकवलं भलयो क्लम् भर्भर्भर्भर्भाष्ट्र

3 40

ज्ञान्य विश्वति । दश्चित्र स्वत्र स्वति विश्वति । दश्चित्र । दश्चित्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वति स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्व क्रम्यम्भित्रम् इत्राह्म विभाग्यः भञ्चल अपन एनिव्यविभाषिमात्र मिन्न विभाष्ट्रिय विउन्नध् तभिमाञ्चित्रधाल्याभाषाः भागसधाला थवल मीभाभभु अधिक रिलाय जा डे रिल्थ कड नि थन्तरात्र वित्र के त्रिक्षेत्र व्याप्त स्थापन यत्त्रया भाष्टिय या देश हैं अधि यह से क्लें निवुष्तवालि नहिम प्राप्त प्रविश्वा प्राउत्रभनकल्ड् व प्रकृमनं निम्मभभक्षिमा प्राकित्वित्व कलाभनिकि अर्थः

मा क्षेत्र अवस्थित । एवं कल्य अविकिष्ठित कृति साथिन कर्डिन महिल्ले साथित है। इस्टिक्निड्र कलाडेल्डा भागविश्व शहे पृष्ठी उद्गरं स्थाया मी विच कन्गा द्वि । वस्त ने भद्दी क्रिक्च विविक्त ग्री अभाभशा अभाष क्षित्रिक्षित्र हर्ने विक्या विविद्या विविद्या विविद्या कि छिन्छ गिसिक्य के मिम्ब कर्रिश भटर गे पद् म्युनंग्रा स्वर्धियात्र मन्य वैर्थे ग्रस्वितिका विस्ति। इतिहासिका विषयिका

विश्वास्त्रणान्थायाः। जितिन्त्रभगविग्यात्रः। प्रमण्डा क लम्भकर्कलय भुवस्त करूक्शिक लया। उन्ने । मिर्मिश्विभावन क्रुर्शियर । विष उद्यापाः करकान्य वस्त्राच्यापाः जन ला अल्वेड मु/उद्गर्भ इम्बेब कि क्रिय पुन एरविधिन ही भीडिंग्। धर्म विस्त्र ४५ द्र्षकार गड थ स विद्व सहित के भारा कि थ दे कि के बेहू भश्रा भविसे भायायान्य कि अवस्थान भूषविधारिनं इष्ट्रिक्च वश्चार्य विकिश्चित्र इसं यक्त यक्तदंग्रेकि प्रिवृति भेष्यदृत्ति में

नं भूभरुद्धारक सम्बद्धाः विष्ठुनक लक्षक्ष अरुप उलं ध्रारुइनव भर्धश्रुधहर्या प्रारुक्त भ्रम उन्धें अर्थे कुषेः प्रभारते पद्ग भर्भक्रमध्याप इंडगवर एक्छेव प्रभारते मिन मिन भेर्य प्रवासिव श्री भूक मेक्षियुग्र निरुश्नेकी पर्मः भूलद्वार एव भये उन्नहर लेव बिरे भन्ना न उन्नये क विनित्रिध उ उत्तर है विश्व करि। न रक्ष न तम् इत्तर पार्ड के वसमन्धिकार ग्रेश्वकवहम्बेज्य मुरुष्धान्स वं हेर कुलनया वाज्य हरू स्ट्रान्ड इंती उन्लेक भवा वण्यया एवमक्ष्णण्ड्यंभागण्धिणिष्ट यीन उड्ड ने हम् निरुषि : चुन्सभर्भेशिषनी रहे

प्रमञ्ज्ञ प्रभवर्षभित्र विराधित वेषा गाउँ है सन्ध्र सभ् सिवः यद्यास्ति। शिष्वीवैदेव्द्विति पर्द्वा सिथ्यर्ग्याः भगगमन्भक्ताः युद्धामन् उद्ये किमानिकवियत् उद्ये वागके भन्ने अप्ति दि थ सन्विक्रेडीलं सिवविक्र इसण्डिभेष दिवे येगे+ क्षत्य भग्ने वाराम्लयकेवलः भी भूमित्र व म नमाराविष्ण स्थाने स्थाने स्थाने गार्थी र प्राप्ति स नुस्राम्भकनः, यश्थिमञ्चक्रं प्रवाह महस्र इ.११तभरिता निवा पुनिष्टा सरेता सर्वा भविभित्र एवं भधार थि, वृष्क भित्र भडिश्ले व्याप्त विकारिक विकार कार्य कार्य कि का

थं इसक् इ वस वस बदा भेग छ। उरस् उ कि वस ने क रूप, भिरीय प्रकल्लाभारूप, पराउं प्रक्रा किन उन योऽथन्तु उभ्देश इत्रुप्तक दुथः भन्ने उत्रिक्ष मक्उन प्रमान्धिद्विक न्यक्ष्मक विकन्या के थ द्रमश्चार्य कर्जि : अक्र म्नीयमिकिक्त थाउ थंड्डिन्। अधिथा उद्यिष्ठ, भागवंभ्र र द्विय रूथ इ। इष्टिस्य दिस्भक्त स्वत्र सेस्क ल्यु पड्ड हे बडा उन्ति वि थिउड्अकद क्रुइंग्ड्रव्य अ क्रीय्विकल्प थ क्रिवि ट्युअप म् अपू ७ विविकल्प इः उरिधिविविकल्प ह ब्रेमभन्ड बंभः। विकल्स द्विति। भिष्ठा उति भड़ा । इ क्रिय दिस् अभि अभागित दित्यः अस्टर् वर्षे

iar

ण्हर आहरकें : राभ्र ताही क्रिंड भ्रह ह्मिरर का : हर क्राप्त के अपने के इस न मान्यार अध्यात्र हे में अध्यात्र अध्यात्र भारति है। र वस्तर्भक्ष देवता भी के स्वार्थ है क यहाँ विद्यार के ने स्वास्त के स्वास्त है। इस स्वास हास्य के कार्या से विद्या । निकार कार्या विकार कार्या । नव ब सम्बद्धार्थ में प्रतिस्था महत्व महत्व स्थान हीस्डिहरं, रप्टानी फुरह यह जहरूप है, होद्वीर THE SET STEP TO THE HEAD OF THE PERSON THE PERSON THE PROPERTY OF THE PROPERTY इस्हों में करते की मार्च में हम्हें कर के कि हम ह वर्ष्या नद्य विद्यक्ष्यियः। हिर्द्धिक

Englader & Charle

ब्रुम् व्यक्ति हम्मान महत्त्व कर् हिंदी कि : सिर्वित : सिर्वित : सिर्वित : के शही निक्ति शास्त्र होते हैं कि विश्व कि वि PERQUESII: SCOUPFEISTFUFIE क्रियतिम भूक्षमार्थिक मिश्म भी स्ट्रिय कि न्ये हो , हर ह कि जा था कि के ह है , हड म क भी र मा एमहिहम्मिन्ने विशिक्त मुस्के विकार महाराष्ट्र その時間はそのはできる中である。日本中は一日本中に यह छ हो। इस स्थान है। इस है। इस है। ,त्य्रिशिहा उसे हुन स्था में इस मिलि हिन के पृह एक एक हो महा उस है विश्व कर है है है है कि है के हैं कि है कि

* 3 +6

अल्डोद्भाषाया हत्रे इस इदव अभाग इपेन्स कि वंविष्मं मर्यभुद्वीद्धभीरवधे विक् भगरूर भुग्रु भारानेकप्टमाध्यक्तरहेः भूभारुभूभागभूभेवा विषेत्रे ममडीउम्बभारया वर्ग तक्ष्या विका लिउम्बा बस्ता उथ्रंथि दिसं श्रम मुंध से प्रमान के हैं गिने हर के विस् कहा कि स्मान इरिमर् : चर्डां मञ्चामार्डे जिस्सीक्त विस्ता अभव न्युरं अलं अंधे इत्यों भेष वीरंभक्ष मयंमनि र्षाः, कित्र यस्य सम्बंधिक विकित्र भवन विदेश स्था उधवर अध्ययः अधः। येनयः सन्धरेग अववर नश्वनं ,योवे सून कलशहणः हे ए हिन्नी करणं उद्भ

34P 47

इ दीनं भठेगः हचनं निव हद्भर् शैंभचारीं, ३ ३ अर्थभक्षने ० भूनयाक्तः ३ विष्ट्रनक्तः ३ भेदु दीमात्र जसवतः र मिव ५ डिथाइ समहस्पाद विशे: श्रुपंश्लयक्ल ५ इ विश्वमण्ड्येयम् इत्, श्रु व्यविष्ट्रनक्लमित्रः विष्ट्रनक्लद्रक्रमम्बर्धः र्धिभन्तः । उपीमः भन्नमः भिन्दि । भन्नि अर्थे भन्नाः भक्ताः महिः मिवद्धिभुद्दम् अर्थेभद् मने कि: भत्मा: मिक्द्रिश प्रकृति । अर्थित यमितिः स्तुनमितिः दश्चामितः भिवद्रिक्षिम् मित्रियि मित्रहे चिया हो सन्त मिन् थन् अध भक्ष्तियोगयनः धाउधम्द्रभद्रः। इष्टेरेड इल्ले

निक्रवि वध्रमम्यद्भ उस्वि किए निस्ट्रेश्व गाउभाव क्रणभट्ट रावे भ्रेयभाग जिल्ला भ्रेम गडकलनं विविकत्य भजनं श्रेंग्ड्रभवभगं इवभ पिवभाउर्भुः सुरुभग्नभी ॥ यहि न् उरहर हवक भणमुद्रमिलिम अभिवास भड़भणणमुन्द्रित किनिस्केलक सविवा ध्वारू ५५ ४ ४ वक्ला उभगेस इविच्नम् अभ्य तथलहित्राहित्यल अग्न मुभक् विकिल्कं उस्प्रिमालक विज्ञभभा इवलक्रमल क्रमलिकनिभन्लिभयद्भवड ॥ ॥५१९५५भ वे अक्रमन्त्रभन्वभभ किक्भारं ॥ विष्डे अन्द्रम् इलाइम्। विर्धाः द्रयंषा इनिष्

340 **#9**

विक्षिकि दिस्थं उद्देशियुक्त भी उद्या सुधियनमेय य द्वाभाष्य्यात्रना एक दूपक न्या भिक्ष द्वा उद्या थिष्टितिया । रिवर्षे उया श्रु भने ५ छि, एल कि थ भूगानाज्ञनन् दिश्वास्त्रभाषा स्वाधिक कि विस्पाध भारिभाषाज्ञित वेक् विक्विभेविक पित्रा संस्थि श्रुविम्बुवम्बक्ष्यक्ष्यक्ष्यभागा एउद्येव क्रे उभ्रवंथ जिव श्रव्यायायमं इ किएभी थ बिष्टि मि मजीन भरं वेश्वान मिजिंड या वरुव स्मिविक्ड भाम म सम्भिति वार्रिम्द्रिम्द्रिम्द्रिम्द्रिम्द्रिम्द्रिम्द्रिम्द्रिम् थम्महब्रमायेक्ट्रभण्डा अग्रेड्यंग्रेड्रिय यम्भ्रमयंड्र नाडींड। एवंथ हिं वक्न मिष्मिड्न नि।

3+

उधारि, थ्रायई द्विषा, अन अङ्गाउनि राम्काल्यभ ल्नक्रुर्व्यकूटस्ट्रम् इक्ट्रुर व्यस्न विगनिअवि रुगाउय विक्रभेदायरेथ्ड भन् बहु महारेश्वरहे थ दिनभा उर्द्वरेशास्त्र हेड त्या देश में प्रमान अदिमभा उभिन्नियह छभन् भारिमभाने मानवभाउ श्रहभाष्याव शिवशां द्वीगिने व सेका न्मप्रिम ाण्वथद्वभान्य शिर्मिष्ठभवद्वरीन्य भभट्टावर् म्मिरिधाक्रकल विणिः, विश्वनेकलथर् अभ्यक्रल रं जे विष्ट केना मिधुं मिवकनि डिश्विविष्: । एवंनवर इक् यहिति भयं मणभी अल अक् पगुपरि विवे कुवन उद्वरुल द्व श्वरुष्ट मः। अद्विवश्वरिष्ठ ।

3 ar ar